गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

गुरुदेव विशेषांक

मासिक
गोलालारीय दर्शन
अपनों के साथ अपनी बातें

सफलता के 11 वर्ष

लेट पोस्टिंग

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 11 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 10 माह – 15 मार्च 2020 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

विश्व में प्रथम बार तेरह जिनालयों के ऐतिहासिक पंचकल्याणक संपन्न

अनुपमा जैन, इन्दौर । आचार्यश्री के सानिध्य में इन्दौर नगर एक साथ 13 जिनालयों के पंचकल्याणक के स्वर्ण अवसर का साक्षी बना । 26 जनवरी से 1 फरवरी तक पाषाण से भगवान बनाने के इस महान पुण्य कार्य में नगर और आसपास से ही नहीं, देश के सुदूरवर्ती भागों से भी लाखों धर्मावलंबियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की । स्वयं आचार्यश्री भी इस ऐतिहासिक पंचकल्याणक में अपना सान्निध्य देने के लिए गदगद थे । आचार्यश्री के सानिध्य का ही प्रभाव था कि न केवल के नवीन जिनालयों और पूर्व जिनालयों के साथ ही देश भर के विभिन्न मंदिरों के लिए भी हजारों श्रद्धालु प्रतिमाओं को लेकर इस महामहोत्सव में शामिल हुए।

गोयल नगर के चमेली देवी पार्क में इसके लिए विशाल और भव्य पांडाल तैयार किया गया । दयोदय चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस समारोह का भव्य शुभारंभ 26 जनवरी को कनाड़िया रोड स्थित नवनिर्मित जैन मंदिर से चमेली पार्क तक विशाल शोभायात्रा से हुआ, जिसमें हजारों नर नारी गाजे बाजे के साथ चल रहे थे । पंचकल्याणक के मुख्य पात्र, भगवान के माता पिता, सौधर्म इन्द्र, कुबेर, यज्ञनायक इत्यादि भी रथों पर आसीन थे । आचार्य श्री भी अपने शिष्यों सहित जुलूस में सम्मिलित हुए । चमेली पार्क पहुंचकर शोभायात्रा का समापन हुआ । यहां इस महामहोत्सव का प्रथम चरण अर्थात ध्वजारोहण पूर्ण हुआ । प्रतिभा स्थली की छात्राओं द्वारा भारत की महान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक, विरासत को दर्शाती सारगर्भित और मार्मिक प्रस्तुतियां दी गई, तत्पश्चात गुरुदेव का मंगल उद्बोधन हुआ ।

27 जनवरी से पंचकल्याणक की मुख्य क्रियाएं आरंभ हुई । लगभग 5000 से अधिक इन्द्र इन्द्राणियों के साथ प्रात: श्रीजी का अभिषेक और शांतिधारा के बाद पात्र शुद्धि, सकलीकरण, नित्य नियम पूजन की गई । दिन में याग मंडल विधान किया गया। शाम को मंगल आरती के बाद गर्भ कल्याणक की पूर्ववर्ती क्रियाओं में इन्द्रसभा, अष्ट देवियों द्वारा माता मरुदेवी की चर्या, सोलह स्वप्नों का मंचन किया गया ।

अगले दिन उत्तर गर्भ कल्याणक में महाराज नाभिराय का दरबार लगा । स्वप्न फल, अष्टदेवियों द्वारा माता की सेवा, छप्पन कुमारियों द्वारा माता को भेंट दी गई । माता की गोद भराई का आयोजन किया गया । जन्म कल्याणक महोत्सव में भगवान के जन्म की घोषणा होते ही सौधर्म इन्द्र द्वारा कुबेर और अन्य इन्द्रों के साथ सपरिवार अयोध्या नगर आगमन हुआ । यहां शचि इन्द्राणी माता के प्रसूति कक्ष से शिशु बालक को उठाकर उनके

पास मायामयी बालक को सुला देती है । सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर आदिकुमार को लेकर पांडुक शिला पर ले जाते है, जहां 1008 कलशों द्वारा प्रभु बालक का जन्माभिषेक होता है । जन्माभिषेक की विशाल शोभायात्रा चमेली पार्क से कनाड़िया रोड स्थित जिनालय तक निकाली गई जिसमें अनेक बैंडबाजे के साथ रथ और बग्गियों में इन्द्र, कुबेर, यज्ञनायक आदि अपने परिवारों के साथ विराजमान थे ।

तप कल्याणक में आदिकुमार का राज्याभिषेक हुआ । महाराज के कार्यकाल में प्रजा असि, मसि, कृषि द्वारा जीवन यापन की शिक्षा दी गई । ब्राह्मी और सुंदरी को शिक्षा और लिपि का ज्ञान कराया गया । नीलांजना नृत्य द्वारा महाराज आदिकुमार को वैराग्य हुआ ।

ज्ञान कल्याणक के दिन मुनि ऋषभसागरजी की आहारचर्या की गई । इसमें श्रेयांस राजा और सोमप्रभ ने ऋषभसागर महाराज को इक्षु रस का आहार दिया । दोपहर को भगवान को केवल ज्ञान की प्राप्ति होते ही इन्द्रों द्वारा समवशरण की रचना की गई और आचार्य श्री ने समवशरण में विराजमान होकर धर्मोपदेश दिया । आचार्यश्री ने जिन प्रतिमाओं को सूरी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किया।

अंतिम दिन प्रात:काल प्रभु मोक्ष गमन कर मुक्ति को प्राप्त हुए । दोपहर में तेरह जिनालयों की गजरथ फेरी आरंभ हुई । इसमें सबसे आगे स्वर्ण रथ चल रहा था, उसके पीछे सौधर्म

इन्द्र और क्रमशः सभी मुख्य पात्र रथों में सपरिवार चल रहे थे । बाहर से आये अनेक बैंड भी अपनी अपनी विशेष धुनों से सबका मन मोह रहे थे । आचार्यश्री ससंघ पूरे समय फेरी में परिक्रमा कर रहे थे । उनके पीछे ब्रह्मचारीगण, बहनें, प्रतिभा स्थली की छात्राएं और अपार जन समूह था । गजरथ फेरी के पश्चात ग्यारह प्रतिमाओं को एक साथ महामस्तकाभिषेक किया गया । इसके पश्चात सभी जिन प्रतिमाओं को उनके यथेष्ठ जिनालयों में प्रतिष्ठापित किया गया । मुख्य पात्रों के सम्मान और उन्हें नई उपाधियों से विभूषित किया गया ।

पात्र चयन के पश्चात आचार्यश्री ने तिलक नगर में आयोजित धर्मसभा में कहा कि जब कोई यात्री टिकट लेकर गाड़ी में बैठता है तो उसका टिकट चेक करके उसे निर्विकल्प यात्री घोषित कर दिया जाता है । आप सभी ने पंचकल्याणक महोत्सव का टिकट खरीद लिया । अब आप सभी को निर्विकल्प कर दिया गया है, ताकि अच्छे से अच्छे भाव उत्पन्न कर सको । हम सब भी पाषाण से भगवान बनने वाले महोत्सव के सुपात्र बनें । आचार्यश्री ने कहा कि महोत्सव में कुछ तो खुद बोली लेकर पात्र बन गए । कुछ दूसरों को देखकर और कुछ लोगों को समझाकर पात्र बना दिया गया । जैसे दो बैलों पर किसान जुआरी रख देता है, ताकि वह मिलकर काम कर सकें । वह इधर उधर नहीं भाग सकते, वैसे ही आप लोगों को जिम्मेदारी दे दी गई है । अब आप लोग भी इधर उधर कहीं भाग नहीं सकते । विवाह में पिताजी को आने जाने की छूट रहती है, लेकिन जिसका विवाह है, वह अब कहीं नहीं जाएगा ।

पूरे कार्यक्रम के दिनों में उपस्थित इन्द्र इन्द्राणियों, मुख्य पात्रों और अन्य दर्शनार्थियों के लिए दोनों समय शुद्ध व सुस्वादु भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था दयोदय ट्रस्ट द्वारा की गई । इस प्रकार इन्दौर नगर के इतिहास में 'न भूतो न भविष्यति' ऐसे महान पंचकल्याणक का समापन हुआ ।

मरुस्थल में जैसे बूंदें पावस की...

वर्तमान के वर्धमान कहे जाने वाले, सबसे बड़े संत, चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का इन्दौर आगमन कुछ ऐसा ही था। पूरे बीस वर्षों के सूखे मरुस्थल में जैसे पावस की बूंदे बरस पड़ी हो। सिद्धवरकूट से विहार के पश्चात बड़वाह से जैसे ही अपने 31 शिष्यों के साथ गुरुदेव के चरण इन्दौर की ओर उन्मुख हुए, पूरे इन्दौरवासियों में उल्लास की लहर दौड़ गई। लगा जैसे भक्तों की आराधना भगवान ने सुन ली हो। प्रतिदिन इन्दौर से भक्तों के जत्थे के जत्थे विहार के लिए उमड़ पड़े। पूरे रास्ते भर कड़ाके की ठंड और सर्द हवाओं से बचाने के लिए भक्त अपने भगवान को प्लास्टिक के टेंट में आश्रय देते रहे। गुरुदेव भी अपनी अस्वस्थता के बावजूद रुके नहीं।

शनैः शनैः वह शुभ दिन और शुभ घड़ी भी आ गई जब गुरुदेव के पावन चरण इन्दौर की सीमा में पड़े। 5 जनवरी, रविवार को गुरुवर बिंजालिया फार्म हाउस से बायपास होते हुए उदय नगर मंदिर के लिए जब निकले, तो पूरा इन्दौर उनकी भव्य अगवानी के लिए जन सैलाब के रुप में सड़कों पर आ गया। समस्त जैन समाज, सामाजिक संगठन, अनेक महिला मंडल, सोशल ग्रुप और विभिन्न कॉलोनियों के जिनालयों के पदाधिकारीगण, अनेक राजनीतिक नेतागण अपनी अपनी विशिष्ट वेशभूषा में और विशिष्ट प्रस्तुतियों के साथ अगवानी मार्ग पर जगह जगह मंचासीन थे। कोई महिलाएं अपने सिर पर सुंदर कलश लेकर खड़ी थी, तो कोई हाथों में गुरुदेव के संदेश लिखी हुई तख्तियाँ लिए थी। कोई मंगल आरती के लिए दीपों की थालियां सजाकर खड़ी थी, तो कई महिला मंडल बैंड की धुन से गुरुवर की अगवानी कर रहे थे। नगर की सीमा से लेकर पूरे रास्ते को रंगोली से सजाया गया। ऊपर आकाश से ड्रोन द्वारा पुष्पवृष्टि हो रही थी। कदम कदम पर तोरण द्वार लगाए गये। जिनागम के पचरंगे ध्वज जगह जगह लहरा रहे थे। सबसे आगे बड़नगर का बैंड था। अनेक बैंड और शहनाई वादक स्वागत गीतों से पूरे वातावरण को उल्लासमय बना रहे थे। गुरुदेव के स्वागत के लिए अजमेर से स्वर्ण रथ मंगाया गया था जिस पर श्रीजी विराजमान थे। फार्म हाउस से जैसे ही गुरुवर बाहर आये जनसमूह का उल्लास सारी सीमाएं तोड़कर बेकाबू हो गया। इतने वर्षों से 'गुरुवर हमको तारो, इन्दौर पधारों' की गुहार लगाने वाले 'देखो देखो कौन आये, भक्तों के भगवान आये' के नारो से आसमान को गूंजाने लगे। जनता की भीड़ कदम दर कदम बढ़ती ही जा रही थी। क्या बच्चे, क्या जवान और क्या बूढ़े, क्या बीमार, हर कोई गुरुदेव की एक झलक पाने को लालायित था। एक बार दर्शन करने वाले बार बार उन्हें निहारना चाह रहे थे। किसने कितनी बार गुरुदेव के दर्शन किये, यही सबकी चर्चा का मुख्य विषय था। करीब 4 किलोमीटर के विहार में जगह जगह आचार्यश्री को स्वागतातुर धर्मावलंबियों ने रोका। किसी ने गुरुवर के चरण पखारे, तो किसी ने आरती उतारी। गुरुदेव ने भी सबको दिल खोलकर आशीर्वाद दिया। गुरुवर की अगवानी करने में जैनों के अलावा जैनेतर समाज के प्रतिनिधि भी उत्साहित दिखाई दिये। उदय नगर मंदिर पहुंचकर गुरुदेव ने भगवान चन्द्रप्रभु के दर्शन किये और फिर उपस्थित जनसमूह को आशीर्वाद दिया। अपने आर्शीवचन में उन्होंने अपने बीस वर्षों तक इन्दौर न आने का कारण भी बता दिया। बीस वर्ष पूर्व नगर के पास रेवती रेंज में प्रस्तावित प्रतिभा स्थली की वृहद योजना को कार्यरुप न देने से गुरुवर नाखुश थे। आज वह प्रायोजना तेजी से निर्माण को प्राप्त हो रही है। वर्तमान में वहां जैन छात्राओं के लिए प्रतिभा स्थली के निर्माण के साथ ही सहस्त्र कूट जिनालय, गौशाला, संत निवास और अतिथि निवास का निर्माण कार्य द्रुत गति से चल रहा है।

गुरुदेव की पहली आहारचर्या का सौभाग्य प्रतिभास्थली की बहनों और छात्राओं को मिला। चौका लगाने और मुनि महाराजों को आहार देने के लिए भी श्रावकों का उत्साह चरम पर है। प्रतिदिन 250–300 चौके लगाये जा रहे हैं। नवधा भक्ति से अपने गुरु का पड़गाहन कर आहार देने का सौभाग्य पा रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः गुरुदेव का पाद प्रक्षालन, पूजन, प्रवचन और आहारचर्या देखने के लिए दूर दूर से श्रद्धालू आ रहे हैं। आहार के पश्चात गुरुदेव के दर्शन और आशीर्वाद पाने भक्त घंटों प्रतीक्षा करते हैं। शाम को गुरुभक्ति उपरांत भी आचार्य श्री सबको दर्शन और आशीर्वाद से कृतार्थ कर रहे है। उनके प्रवचनों का मुख्य विषय शाकाहार, इंडिया बने भारत, शिक्षा में हिन्दी भाषा को माध्यम बनाने, बच्चों को संस्कारी बनाने, हथकरघा जैसी योजनाओं से सबको स्वावलंबी बनाने, अहिंसक उत्पादों का उपयोग बढ़ाने जैसे ज्वलंत मुद्दों पर आधारित होते हैं।

प्रतिदिन दोपहर में गुरुदेव विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकात करते हैं। इनमें राजनेता, शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता, विभिन्न संप्रदाय के विशिष्ट पदाधिकारीगण होते हैं। गुरुदेव इनसे सामयिक मुद्दों पर विचार विमर्श करते है।

वर्तमान में आचार्य श्री ससंघ नगर के विभिन्न क्षेत्रों के जिन मंदिरों की वंदना हेतु नगर भ्रमण कर रहे हैं। हर क्षेत्र में गुरुवर के दर्शन, प्रवचन और आहारचर्या के लिए समाजजन उत्साहित होकर पुर्ण्याजन कर रहे हैं। गुरुवर भी बरसों से प्यासे भक्तों को उदारता से तृप्त कर रहे हैं।

– अनुपमा जैन, इन्दौर

पंचकल्याणक में शिखरजी ड्रीम्स की मूर्तियाँ भी अभिमंत्रित हुई

रेशू जैन, इन्दौर। इन्दौर महानगर का दिनों दिन विस्तार हो रहा है। सुदूरवर्ती क्षेत्रों में नई कालोनियां बन रही है। विजय नगर से देवास की ओर तलावली चांदा स्थित शिखरजी ड्रीम्स में भी एक नवीन मंदिर का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। यहां कई जैन परिवार निवासरत है। इस मंदिर के निर्माण में सर्वाधिक प्रयास स्व. श्री नरेन्द्रकुमारजी एवं श्रीमती चंदा जैन साइकिल वालो के पुत्र निशांत जैन का रहा है। इनके अथक प्रयासों से आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस आवासीय परिसर में श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान का जिनालय बन गया है। 105 ऐलक श्री निःशंक सागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद और प्रेरणा से भव्य जैन मंदिर का निर्माण हुआ है। आचार्यश्री के सान्निध्य में हुए भव्य पंचकल्याणक महोत्सव में इस मंदिर की प्रतिमाएँ भी अभिमंत्रित हुई है। मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा चिदेश सुपुत्र निशांत–रेशू जैन के द्वारा विराजित की गयी है। 63 इंच की यह अनुपम प्रतिमा बिजौलिया पत्थर से निर्मित हो पद्मासन मुद्रा में है। मुख्य वेदी पर मूलनायक भगवान के साथ वियतनाम मार्बल से निर्मित 29 इंच ऊंची 1008 श्री पद्मप्रभु भगवान की प्रतिमा श्री निर्मलकुमार (एलआईसी) एवं श्रीमती सुनीता जैन, सिवनी वालों ने व 1008 श्री आदिनाथ भगवान की अष्टधातु की मूर्ति श्री कमलेश–नमिता जैन, ढाणे, मुंबई द्वारा विराजमान की गयी है। इसके अतिरिक्त आनंद–राजकुमारी जैन महालक्ष्मी नगर द्वारा भगवान वासुपूज्य की प्रतिमा व श्री आशीष–रुचि जैन ने भगवान मल्लिनाथ जी की प्रतिमा विराजमान कराई है।

मंदिर में संत निवास, पूजन, अभिषेक के जल हेतु कुएँ का निर्माण भी किया गया है। मंदिर की सुचारु व्यवस्था के लिए ट्रस्ट का निर्माण कर संचालन किया जा रहा है। यह मंदिर भी गोलालारीय समाज से जुड़ा होकर इस मंदिर के कई ट्रस्टी गोलालारीय समाज के सदस्य है। ट्रस्ट का उद्देश्य मंदिरजी की देखरेख के अलावा निर्धन परिवारों की शिक्षा व चिकित्सा सहायता में सहयोग करने का है। जो भी समाजजन इस भावना से जुड़ना चाहते है उन्हें हम सादर आमंत्रित करते है। मंदिरजी का निर्माण व व्यवस्थाओं में उदासीन आश्रम के बा.ब्र. श्री अभय भैया 'आदित्य' एवं अनिल भैयाजी का विशेष मार्गदर्शन एवं योगदान निरंतर मिलता रहा है। इस मंदिर को देखने के पश्चात अनेक जैन परिवार यहां बसने को उत्साहित है

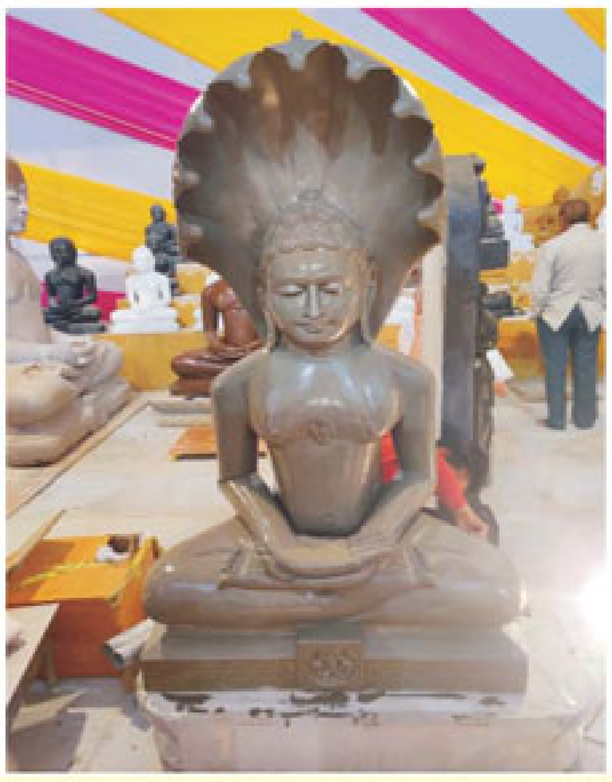

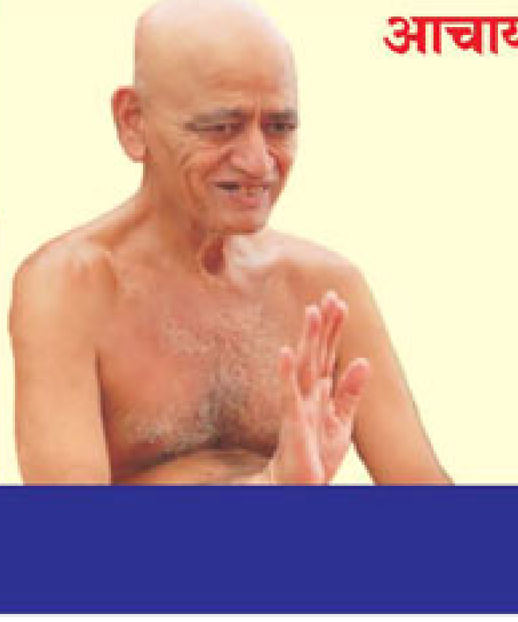

आचार्यश्री के मुखारबिंद से....

अभिषेक, पूजन और दर्शन करें – विद्यासागरजी

पंचकल्याणक का काम हो गया है। अब आपकी जवाबदारी है मंदिर में हर दिन स्वयं को तो जाना है और अपने बच्चों को भी लाना है। बच्चों को ऐसे संस्कार दो कि वो हर दिन मंदिर में अभिषेक, पूजा और दर्शन करें। यह बात आचार्य श्री विद्यासागरजी ने खातीवाला टैंक स्थित मंदिर परिसर में प्रवचन के दौरान कही।

अतीत में कुछ भी हो इससे कोई मतलब नहीं, वर्तमान को देखो, इसमें हमारे पास क्या नहीं – विद्यासागरजी महाराज

अतीत में कुछ भी हुआ हो इससे कोई मतलब नहीं, अनागत में क्या होने वाला है चिंता क्यों करते हो। वर्तमान को देखो। वर्तमान में हमारे पास क्या नहीं है। 84 लाख योनियों में मनुष्य योनी बहुत महत्वपूर्ण है और लोगों को प्राप्त है। हम, आपने जितना किया है उतना ही तो मिलेगा। तराजू में जो डालोगे उसमें ऊपर की तरफ अपने आप ही पता चलेगा कि हमारा तौल इतना है, हमारा मोल इतना है। हमारी दृष्टि अपने कर्म व कर्म के उदय और आत्म तत्व की ओर हो जाए तो हाय हाय समाप्त हो जाएगी। प्रसन्न मुद्रा है तो, प्रसन्न मन भी होना चाहिए। प्रसन्न बाहर से नहीं, भीतर से होता है। यह बात आचार्यश्री ने तिलक नगर में धर्मसभा में कही।

8 मार्च महिला दिवस पर विशेष

अहिंसा से विश्व शांति एवं पर्यावरण शुद्धि

परम पूजनीय, गणिनी प्रमुख, 105 ज्ञानमति माताजी द्वारा आयोजित आलेख लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध –

जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है, यह बात वर्षों से कही और समय समय पर परखी जाती रही है । जैनागम में वर्णित पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को वैज्ञानिक शब्दावली में पर्यावरण के अजैव घटक कहा जाता है । जैव घटकों में हरित वनस्पति और जीव जंतु आते हैं जो इन अजैव घटकों के साथ रहते हैं । आगम में षट्काय के जीवों का वर्णन किया है त्रस जीव और स्थावर जीव। स्थावर जीव पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक हैं जो क्रमश: मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में रहने वाले एकइन्द्रीय जीव हैं । त्रस जीवों में एक इन्द्रीय से लेकर पांच इन्द्रिय वाले अनेक जीव और मनुष्य हाते है । इन षटकाय के जीवों की हिंसा को रोकना ही जैनधर्म के अनुसार अहिंसा है । अहिंसा से न केवल जीव जन्तु और वनस्पति की रक्षा होती है वरन यह संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने का अचूक अस्त्र है। जैन धर्म में वर्णित अहिंसा में सूक्ष्म जीवों से लेकर मानव मात्र के लिए रक्षा का भाव निहित रहता है जो हिंसा और युद्ध से आक्रांत मानव जाति को विश्व शांति का मार्ग दिखाती है और संपूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देती है । इस प्रकार सभी जीवों के प्रति अहिंसा भाव रखने से पर्यावरण की रक्षा भी स्वत: हो जाती है । पर्यावरण के विधिक घटकों द्वारा इसको स्पष्ट करने के लिये सभी का अलग अलग विवेचन आवश्यक है ।

पृथ्वीकायिक जीव धरती में, मिट्टी में रहते है । मिट्टी अत्यंत सूक्ष्म जीवों जैसे बैक्टीरिया से लेकर बड़े जीव जंतुओं का आवास है । मिट्टी को खोदना, खदान–चट्टानों का खनन, कृषि भूमि का जोतना, बाग बगीचे की मिट्टी की निदाई गुड़ाई इत्यादि क्रियाओं से पृथ्वीकायिक जीवों का घात होता है और हिंसा का दोष लगता है । इसलिए जैनागम के अनुसार इन क्रियाओं में संयम बरतना चाहिए। अनावश्यक रुप से, अकारण और गैरजरुरी हिंसा से बचना चाहिए ।

जल में रहने वाले जीव जलकायिक होते हैं । जलीय जीवों मछली, मगर इत्यादि के अलावा जल में अत्यंत सूक्ष्म जीव भी रहते है जो हमारी दृष्टि में नहीं आते । इसलिए जैन धर्म के अनुयायी दोहरे कपड़े से छने हुए जल का ही प्रयोग करते हैं और बिलछानी को भी मूल जल स्रोत में वापस डालते हैं ताकि उस स्रोत के जीव अपने ही स्थान पर जीवित रह सकें और जलकायिक जीवों की हिंसा से बचा जा सके । विज्ञान ने भी आज जैनागम के इस सूक्ष्म विवेचन को स्वीकार किया है । जल का अनर्गल उपयोग या कहें

दुरुपयोग जलकायिक जीवों की हिंसा का कारण होता है । साथ ही जल स्त्रोतों के अनावश्यक दोहन से शुद्ध जल की कमी होने लगती है । कारखानों, फैक्ट्री आदि की रासायनिक पदार्थों से युक्त अशुद्ध और अत्यधिक गर्म जल, जल स्त्रोतों को प्रदूषित करता है जिससे अनेक जीवों की हिंसा होती है । जैनागम में गर्म और ठंडे जल को मिलाने से अचित सचित्त के दोष की बात इसी तथ्य की ओर इंगित करती है ।

अग्निकायिक जीव अग्नि में रहते हैं । बिना देखे या विचार के अग्नि जलाना या अनावश्यक रुप से अग्नि जलाने से इन जीवों की हिंसा होती है, साथ ही अग्नि से उत्पन्न होने वाली गैसें यथा कार्बन डाई आक्साइड , सल्फर डाई ऑक्साइड आदि खतरनाक रुप से पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं ।

वायु में अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीव निवास करते हैं, पक्षियों का भी विचरण वायु द्वारा ही होता है । इसके अलावा सभी जीव जंतुओं और मनुष्यों की प्राणदायिनी ऑक्सीजन भी वायु से ही मिलती है । घरों, कारखानों से, पटाखों के जलाने इत्यादि से निकलने वाला धुआं वायु प्रदूषण का कारण बनता है जिससे अनेक छोटे बड़े जीवों का घात होता है और पर्यावरण को हानि पहुंचती है ।

वनस्पति और सभी प्रकार के हरे पौधे, वृक्ष, फल, फूल आदि भी सजीव हैं । वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने भी यह प्रमाणित किया कि हरे पौधों में जीवन होता है, संवेदना होती है । जैनागम में इन्हें एक इन्द्रीय जीव माना गया है । अनावश्यक रुप से पेड पौधों को तोड़ना, काटना, फूल पत्तियों को नुक्सान पहुंचाना हिंसा है, साथ ही इससे पर्यावरण को भी हानि पहुंचती है । वृक्षों, जंगलों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण में गंभीर असंतुलन होता है क्योंकि हरे पौधे और वृक्ष खाद्य श्रृंखला की प्रथम और सबसे अहम कड़ी होते हैं । इसकी हानि से संपूर्ण खाद्य श्रृंखला बुरी तरह प्रभावित होती है । जंगल अनेक जीव जंतुओं का आवास स्थल भी है जिनके नष्ट होने से जंगली जीव जंतुओं को आवास की समस्या हो रही है । परिणामस्वरुप अनेक जीव जंतुओं की प्रजातियां लुप्त हो रही है । जंगली पशु शहरों और घरों में प्रवेश कर मनुष्यों को हानि पहुंचाते है ।

पर्यावरण विशेषज्ञों की मानें तो वातावरण में फैल रहे प्रदूषण के कारण समूची मानव जाति पर एक बड़ा संकट मंडरा रहा है । अगर इस पर समय रहते रोक न लगाई गई तो इसके और भी हानिकारक प्रभाव होंगे और संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व संकट में आ जायेगा । एक आम इंसान को भी इसका अहसास होने लगा कि मनुष्य ने प्रकृति को हर दृष्टिकोण से नुकसान पहुंचाया है । जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, वाहनों से रोजाना हजारों लाखों टन धुआं निकल रहा है जो हवा को प्रदूषित कर रहा है । कारखाने नदियों में जहरीला कचरा बहा रहे हैं तो कुछ बड़े राष्ट्र समुद्र में परमाणु परीक्षण करके उसे विषाक्त बना रहे है । मनुष्य के स्वार्थ का ही दुष्परिणाम है कि प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा है । आज विश्व के सामने ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ चुनौती के रुप में खड़ी है । औद्योगिक गैसों के लगातार बढ़ते उत्सर्जन और वन आवरण में तेजी से हो रही कमी के कारण ओजोन गैस की परत का क्षरण हो रहा है । इस अस्वाभाविक बदलाव का प्रभाव वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तनों के रुप में दिखलाई पड़ता है । सार्वभौमिक तापमान में लगातार होती इस वृद्धि के कारण विश्व के ग्लेशियर पिघलने लगे हैं । ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के प्रभाव से महासागर के जलस्तर में ऐसी ही बढ़ोतरी होती रही तो महासागरों का बढ़ता हुआ क्षेत्रफल और जलस्तर एक दिन तटवर्ती स्थल भागों और द्वीपों को जलमग्न कर देगा । इसका नतीजा समुद्र के किनारे बसे शहरों को भुगतना पड़ रहा है । इनसे वहां रहने वाले हजारों लाखों लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है ।

जैन धर्म के जीव दया और अहिंसा के सिद्धांत प्राणी मात्र में अपनी आत्मा सम झलक देखते/दिखलाते है । अहिंसाणुव्रत के पांच सूत्र हैं जो पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के समान ही जीवों और वातावरण के अन्योन्य संबंधों पर आधारित है । हिन्दू धर्मावलंबियों में कण कण में भगवान होने की बात करते है, तो अहिंसा का ही आशय होता है । सभी को सुख प्रदान करने के उद्देश्य से ही यह सूत्र देते है कि 'आत्मा सो परमात्मा' अर्थात हर जीव में परमात्मा का अंश होता है इसीलिए जीव जंतु, पशु पक्षियों के साथ दया, करुणा का व्यवहार करने की शिक्षा दी जाती है । अहिंसा का अर्थ केवल किसी दूसरे जीव को न मारने से ही नहीं है वरन ऐसा वातावरण भी नहीं बनाएं कि दूसरे जीव मर जाएं । सारी बुराईयां किसी न किसी के लिए पीड़ादायक हिंसा बनती है ।अत: सभी सद्गुणों को अहिंसा में समाहित किया जा सकता है । यही प्रकृति का धर्म है अर्थात् अहिंसा पर्यावरण का संरक्षण विधान है ।

भगवान महावीर के अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धांत पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में कारगर सिद्ध हो सकते है । जैन धर्म का सिद्धांत कहता है – संयम करो, भोग की सीमा करो । यदि व्यक्ति इस बात को अपना ले तो वनों का अनावश्यक विनाश, भूमि का दोहन आदि कार्यों से यथासंभव बचेगा जिससे वातावरण को प्रदूषित करने वाली कार्बनडाई ऑक्साइड का औसतन प्रमाण घटेगा और पर्यावरण प्रदूषण कम होगा । आज व्यक्ति परिग्रह की दौड़ में दौड़ रहा है और संसाधनों का असीम उपभोग कर रहा है परिणामस्वरुप पर्यावरण दूषित हो रहा है । उपभोग के साधनों का सीमाकरण, जैसे परिवहन के साधन, पानी–बिजली का संयम आदि से इस समस्या का समाधान संभव हो सकता है ।

पर्यावरण को बचाने के लिए जो कार्य विद्वान और वैज्ञानिक आज कर रहे हैं वह कार्य हजारों वर्ष पहले से ही जैन धर्म करता आया है – जैसे कि पेड़ों को न काटना । आज विज्ञान जो बात बता रहा है, वह बात हमारे तीर्थंकरों ने हजारों वर्ष पहले दुनिया को बता दी थी । विज्ञान तो अठारहवीं शताब्दी तक यह भी नहीं जानता था कि पेड़ पौधों में भी जीव होता है जबकि जैन धर्म ने हजारों वर्षों पहले कहा था कि पेड़ मत काटिए, इनमें जीवन होता है। विज्ञान आज कह रहा है कि पटाखे मत छोड़िये, पर्यावरण बिगडता है । जैन धर्म के अनुसार पटाखों से वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है । शाकाहार भी अहिंसा का सर्वोत्तम उदाहरण है तो भगवान महावीर के 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत का पुरजोर समर्थन करता है । 'आत्मन: प्रतिकूलानि परेशाम न समाचरेत' अर्थात जो व्यवहार आपको पसंद नहीं वो दूसरों से भी नहीं करें । हर प्राणी को अपना जीवन प्रिय है, अत: अपने स्वार्थ और जीभ के स्वाद के लिए दूसरे जीव की हत्या न करें, न ही करवाएं । पर्यावरण संरक्षण के लिए भी शाकाहारी जीवन शैली सर्वोचित है । शाकाहारी व्यक्ति के कार्बन फुट प्रिंट कम होता है जो प्रदूषण कम करने में महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने भी पर्यावरण के संरक्षण के लिए अहिंसा को सर्वोपरि माना था । जैन धर्म में श्रावक और साधु अहिंसा व्रत का पालन करते हुए पर्यावरण के सभी जीवों से जाने अनजाने में हुई हिंसा के लिए प्रतिक्रमण द्वारा क्षमायाचना करते है और संपूर्ण विश्व की शांति के लिए भावना करते हैं

सर्वे पि सुखिन: संतु सर्वे संतु निरामय:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:ख माप्नुयात

जैनागम में बताया गया अहिंसा का सिद्धांत विश्व बंधुत्व और विश्व शांति के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है । संसार के सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव से शत्रुता और अशांति खत्म होती है ।

सव्वेशु मैत्री गुणिशु प्रमोद, कलिशतेषु जीवेषु कृपापरत्वम
माध्यस्थ भाव विपरित वृत्तौं, सदा ममत्मा विद्धातु देव ।

अर्थात मेरा सभी जीवों से मैत्री भाव हो, गुणीजनों से ममता भाव हो, दुर्जनों से समता भाव हो । ऐसी भावना से विश्व में शांति और बंधुत्व बढ़ता है । आज पर्यावरण प्रदूषण और विश्व शांति किसी व्यक्ति या राष्ट्र विशेष की समस्या न होकर एक सार्वभौमिक चिंता का विषय बन गया है । परिस्थितिकीय असंतुलन हर प्राणी को प्रभावित करता है अत: यह जरुरी हो जाता है कि विश्व के सभी नागरिक पर्यावरण समस्याओं के सृजन में अपनी हिस्सेदारी को पहचाने और इन समस्याओं के समाधान के लिए अपना अपना सहयोग दें जिस पर अब विचार नहीं ठोस पहल की आवश्यकता है, अन्यथा जलवायु परिवर्तन, गर्माती धरती और पिघलते ग्लेशियर मानव जीवन के अस्तित्व को खतरे में डाल देंगे । यदि पर्यावरण को शुद्ध रखना है और विश्व में शांति चाहिए तो हमें जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांतों को मानना पड़ेगा और उन पर चलना होगा। वस्तु पर्यावरण की समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब आवश्यकता, इच्छा और भोग के संयम का मूल्य समझ में आये।

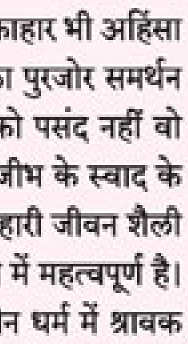

दूसरे की वस्तुत या दूसरे राष्ट्र पर आधिपत्य की दुराकांक्षा का त्याग, अपरिग्रह का ही रुप है । संयम ही जीवन है, इसे अपनाएं। जीवन में दया, करुणा और अहिंसा का मार्ग अपनाएं । इसी से संपूर्ण विश्व में शांति होगी और शुद्ध पर्यावरण, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्राप्त हो सकेगी।

–अनुपमा जैन, सह संपादिका

आचार्यश्री के मुखारबिंद से....

जो हंसी उड़ाते थे... वो भी आज जैन धर्म को मान रहे है...

अंजनी नगर में भारी भीड के बीच आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि मुझे याद है, बचपन में लोग हंसी उड़ाते थे कि ये जैन बनिए छानकर पानी पीते है । अब पूरी दुनिया छानकर पानी पी रही हैं । ये रात को खाना नहीं खाते । अब दुनियाभर के डॉक्टर सलाह दे रहे हैं कि सोने के तीन घंटे पहले दिन में ही खाना खा लेना चाहिए, क्योंकि सूरज की अंतिम किरण डूबने के बाद खाने में बैक्टीरिया पैदा होने लगते हैं । लोग मजाक में कहते थे – ये घास फूस खाते हैं । अब डॉक्टर सलाह दे रहे हैं कि शाकाहारी रहना चाहिए । पूरी दुनिया में स्वस्थ एवं लंबी जिंदगी जीने के लिए शाकाहार पर जोर दिया जा रहा है क्योंकि दुनियाभर में फैलने वाली वायरसजनित बीमारी केवल मांसाहार से फैलती है । जैन दर्शन पूर्ण रुप से वैज्ञानिक है, जो ये बात सिखलाता है कि अच्छा जीवन जीने के साथ अच्छी मृत्यु को कैसे प्राप्त करें... लोग मुख पर पट्टिका (मुंहपत्ती) पहनने में शर्माते थे । अब कोरोना वायरस के कारण दिन भर मुंह पर कपड़ा लगाकर रहते है ।

बच्चों की पहली पाठशाला घर में मिले संस्कार से शुरु होती है....

बच्चों की पहली पाठशाला उसके घर के संस्कार से शुरु होती है । जीवन में संस्कार की पाठशाला कहां से शुरु होती है, एक मां बच्चे को लेकर मंदिर में आती है । पाठशाला शुरु हो जाती है । नमोस्तु करती है और बच्चे को अर्थ बताती है कि नमोस्तु का अर्थ धोक देना होता है । बच्चा देखता रहता है कि मां णमोकार की माला फेरती रहती है । माला पूर्ण होने के बाद जब मां उठी तो बेटा भी उठ गया । इसे कहते हैं पाठशाला । संस्कार इसे कहा जाता है कि जैसा आप करेंगे वो बच्चे करेंगे । यह बात आचार्य श्री ने एमजी रोड़ स्थित उदासीन आश्रम में अपने प्रवचन में कही ।

गोलालारीय समाज के सदस्य जिन्होंने पंचकल्याणक महोत्सव में पुण्यार्जन किया

श्री शिखर–स्वर्णलता जैन, वैभव नगर

श्री जितेन्द्र–निधि जैन, वैभव नगर

श्री संजय–रजनी जैन, मल्हारगंज

श्री अरविन्द–अनीत जैन, स्कीम नं. 78

डॉ. योगेश जैन

श्री अरुण–आभा जैन, विजय नगर

राजेन्द्र–अनिता जैन एवं परिवार, सुखलिया

श्री अजय–अर्चना जैन, महावीर नगर

श्री रजनीश–रचना जैन, अनूप नगर

श्री दीपक–कल्पना जैन, न्याय नगर

श्री विजयकुमार जैन, उदय नगर

श्री आनंद–राजकुमारी जैन, महालक्ष्मी नगर

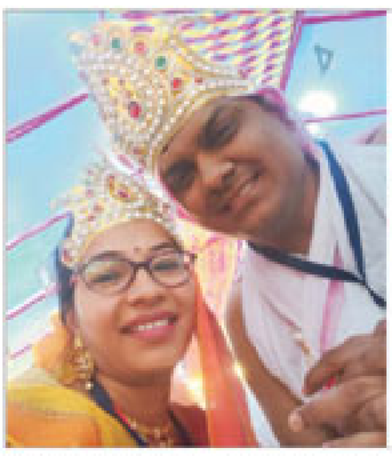
श्री आशीष–रुचि जैन, महालक्ष्मी नगर

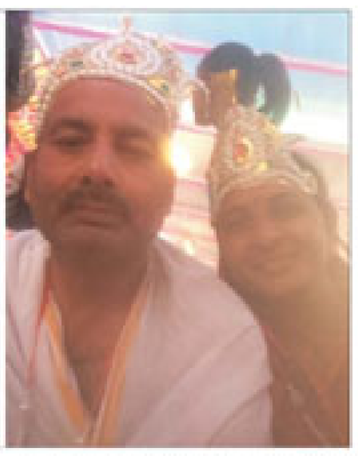
श्री धर्मेन्द्र–नेहा जैन, स्कीम नं.74

श्री राजेश–अनुबाला जैन, ब्रजेश्वरी

श्री अंकुर जैन

श्री शिरीष जैन

श्री भावेश जैन

निहार व्यवस्था – विजय नगर, इन्दौर

* श्री नागेन्द्र जैन जिन्होंने पारस चैनल व आचार्यश्री ससंघ की फोटोग्राफी एवं प्रचार व्यवस्था संभाली है।

* पंचकल्याणक महोत्सव में विभिन्न मंदिरों में समाज सदस्यों ने प्रतिमा विराजमान कर पुण्यार्जन किया –
1) श्री चिदेश निशांत–रेशू जैन 2) श्री कमलेश–नमिता जैन 3) श्री अरुण–आभा जैन
4) श्री प्रवर अरविन्द जैन 5) श्री सोमचंद्र–प्रभा जैन 6) श्रीमती सविता–डीसी जैन 7) श्री आनंद–राजकुमारी जैन
8) श्री आशीष–रुचि जैन 9) श्री सुनील–ऋतु जैन 10) श्रीमती सुखदेनबाई–बालचंद जैन
11) श्री सोमचंद–प्रभा जैन, खुशालचंद–रुक्मण जैन, शीलचंद–द्रोपदी जैन

* त्यागी शोध आहार व्यवस्था – 1) श्री नागेन्द्र जैन, 2) श्री भरत जैन

* मंच एवं पांडाल व्यवस्था – 1) श्री नीरज जैन 2) श्री अंकित जैन 3) श्री मनोज जैन 4) श्री जयंत जैन
5) श्री राजीव मंडावर 6) श्री महेन्द्र जैन * मूर्ति प्रतिष्ठा समिति – श्री पवन कटेरा

प्राप्त सूचना एवं फोटो के आधार पर सूचना प्रकाशित की गयी है। **आप सभी को साधुवाद।**

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका

श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें ।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

विशेष सहयोगी

श्री शरदजी सराफ, डोंगरगढ़,
श्री रमेशचन्दजी जैन, इटारसी
श्री जय कुमार जैन (जलज), रतलाम
श्री कमल कुमार जैन, श्री भूपेन्द्र जैन ललितपुर
श्री राजेन्द्र कुमार जैन, सीहोर

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट – 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	350/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेंजे।

मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज का विदिशा में हुआ ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

सुनील जैन, गंजबासौदा । मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज का विदिशा नगर में हुआ ऐतिहासिक मंगल प्रवेश । पांच किलोमीटर तक ऐतिहासिक जुलूस एवं हजारों की संख्या नगर के विशिष्ट जन, समाजजन, राजनीतिक नेता, सामाजिक संस्थाओं ने बीस साल बाद पधारे मुनिश्री प्रमाण सागरजी महाराज का भावभीना अभिनंदन किया । शहर से पांच किलोमीटर से दूर से ही शुरु हुये जुलूस को समाज के बंधुजन स्थान स्थान पर रांगोली सजाकर अपने अपने घरों पर मंगल आरती कर अपने आपको धन्य मान रहे थे, वहीं जैनेत्तर समाज भी पूज्य मुनिसंघ के दर्शन कर लाभांवित हो रहे हैं । नगर में विराजमान मुनिश्री प्रसादसागर, मुनिश्री उत्तमसागर, मुनिश्री पुराणसागर, मुनिश्री शैलसागर एवं मुनिश्री निकलंक सागरजी महाराज भी अपने ज्येष्ठ मुनिश्री से मिलने को लालायित थे । मुनिसंघ 8 बजे श्री शांतिनाथ जिनालय स्टेशन मंदिर से निकले एवं गुलाब वाटिका पर भव्य मंगल अगवानी कर सभी मुनिराजों ने त्रयवार प्रदक्षिणा कर नमोस्तु किया एवं सप्तऋषिराज नगर के मार्ग से आगे बढ़े । स्थान स्थान पर अभिनंदन गेट और जन समूह मुनिसंघ की प्रतीक्षा कर रहा था और जैसे ही मुनिराज आये उन्होंने पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती कर अपने आपको धन्य माना। इस अवसर पर जिला मुस्लिम समाज ने बड़ा बाजार चौराहे पर अपनी समाज के साथ मुनिश्री का इस्तकबाल किया वहीं शक्ति हेल्थ क्लब, विदिशा व्यापार महासंघ, पूज्य सिंधी पंचायत, सराफा एसोसिएशन, चेम्बर ऑफ कामर्स, कपड़ा एसोसिएशन, मुनिसेवक संघ, विद्यासागर नवयुवक मंडल, दि. जैन महिला समिति अपनी विशेष पोशाक में पगड़ी के साथ नजर आई तो वही गुरुवर सेवा समिति ने तो पूरे पांच किलोमीटर के एरिया में अपने बैनर लगाये थे एवं भारत भारती महिला मंडल, ब्राह्मी महिला मंडल, अरिहंत विहार महिला मंडल, जैन मिलन ने अपने अपने टेंट और बैनर लगाकर मुनिश्री की मंगल आरती उतारी । अनेको स्थान पर स्थानीय नागरिकों ने मुनिसंघ की मंगल आरती की, शोभायात्रा मुख्य मार्ग से स्टेशन माधवगंज चौराहे पर धर्मसभा के रुप में परिवर्तित हो गयी ।

समसामायिक – दर्पण झूठ ना बोले...

समाज में जो जो घटित होता है वह हमें न्यूज में मीडिया में या फिल्म के माध्यम से देखने को मिलता है इसीलिए कहा गया है कि न्यूज मीडिया व फिल्म समाज का दर्पण हुआ करता है और दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता है । गोलालारीय दर्शन समाज का दर्पण है और समाज में होने वाली गतिविधियां व प्रतिक्रिया को समय समय पर दर्शाता है अभी दिसम्बर माह में गोलालारीय दर्शन का विवाह विशेषांक बहुत ही अच्छा तरीके से प्रकाशित हुआ जिसके लिये गोलालारीय दर्शन टीम को बहुत बहुत धन्यवाद । आजकल शादी विवाह संबंध करना परेशानी बन गये हैं आज से 30 वर्ष पूर्व समाज के लोग कहते थे कि कोई अच्छा सा लड़का बताएं लेकिन आज लड़के वाले को कहना पड़ता है कि कोई अच्छी सी लड़की बताएं। समाज में इतना परिवर्तन क्यों इसके पीछे कारण हैं पुराने समय में लड़की के मां-बाप लड़के को देखकर संबंध कर दिया करते थे लेकिन अभी कुछ वर्षों से लड़कियां लड़कों की अपेक्षा ज्यादा पढ़ाई कर रही हैं, अच्छी नौकरी कर रही है और लड़कों से ज्यादा कमा रही है ऐसी परिस्थिति में लड़कियां की योग्यता के अनुसार वर मिलना थोड़ा मुश्किल हो रहा है । जब लड़के और लड़कियां मां बाप से ज्यादा पढ़े लिखे, होशियार और ज्यादा कमाने वाले हो जाते हैं तो उनके निर्णय वह स्वयं भी लेने लगते हैं यही कारण है कि बहुत से लड़के और लड़कियां अपनी योग्यता के अनुसार अपने साथ काम कर रहे साथी के साथ संबंध करना पसंद करती हैं और उन्हें ही अपना जीवनसाथी बना लेती है यह सत्य है, इसे नकारा नहीं जा सकता ।

शादी संबंध के मामले में कुछ परेशानी समाज के सदस्यों के व्यवहार की भी होती है यह मानव स्वभाव है कि हर मनुष्य अपने आप को किसी दूसरे से ज्यादा श्रेष्ठ, योग्य और होशियार समझता है दूसरे को जब तक आप बराबरी या उसको समझने की कोशिश नहीं करेंगे तब तक समाज में संबंध करने में परेशानियां आती रहेगी क्योंकि संबंध हमेशा बराबरी वालों में ही हुआ करते है । संबंध के मामले में ज्यादातर पढ़े लिखे लड़के और लड़कियों की आकांक्षा रहती है कि उनके बराबरी का पढ़ा लिखा बराबरी का कमाने वाला व स्वस्थ, सुंदर दिखने वाला जीवनसाथी हो और यह जरुरी नहीं कि सभी गुण एक व्यक्ति में मिल जाये । अत: संबंध के मामले में योग्यता को प्राथमिकता देवें बाकि दूसरी चीजों को इग्नोर करें कई बार बहुत प्रयास करने के बाद भी जैन समाज में संबंध करना मुश्किल होता है ऐसी परिस्थिति में समाज के लोग दूसरे समाज के लड़के लड़कियों से संबंध करने को मजबूर होते हैं । संबंध दो परिवारों का मिलन है और इस मिलन के अंदर झूठ बिल्कुल भी नहीं चलता है यदि आप संबंध के पूर्व कोई झूठ बोलते हैं और वह दूसरे पक्ष को बाद में मालूम पड़ता है तो बात खराब होती है और संबंध नहीं हो पाता है । अत: किसी भी बात को छुपाये नहीं व हृदय से सच को कबूल करें ।

यदि आपके पारिवारिक संबंध अच्छे होंगे तो आप एक अच्छा संबंध ढूंढने में सफल होंगे । कभी कभी छोटी छोटी सी बातें भी संबंध में रुकावट पैदा कर देती है। जैसे – बहुत से उम्मीदवारों के बायोडाटा में इनकम का स्पष्ट ना लिखा होना, घर का मकान है या नहीं स्पष्ट नहीं होना, गोत्र या समाज का स्पष्ट उल्लेख नहीं होगा । रंगीन चित्र बहुत पुराना होना । कच्चे कान का होना, किसी दूसरे के बहकावे में आ जाना आदि बहुत सी छोटी छोटी बातें हैं जो संबंध करने के लिए मायने रखती है ।

यदि शादी संबंध के बारे में आपको कोई मदद कर रहा है तो उसे स्पष्ट समय पर जवाब देवें । संबंध के पूर्व आप अपनी प्राथमिकता तय करें क्योंकि दुनिया में अभी तक भगवान ने ऐसा कोई लड़का या लड़की नहीं बनाई जिसमें सभी तरह के गुण मिल जावे इसलिए सबसे पहले उनके गुणों की प्राथमिकता को तय कर लेवें की आप क्या चाहते हैं ।

आप कुंडली मिलान के पक्षधर हैं या नहीं बायोडाटा में स्पष्ट करें तो आपको और सामने वाले को काफी सुविधा होगी । शादी संबंध बहुत ही निजी मंगल कार्य है इसमें जरुरी नहीं कि आप बहुत अधिक लोगों को बुलाएं या बहुत अधिक खर्च करें । आप सादगीपूर्वक कम लोगों के साथ कम व्यंजनों के साथ अच्छे से विवाह कर सकते है जिससे समाज की सेहत सुधरेगी । ज्यादातर लोग देखादेखी में अत्यधिक खर्च करते है या कर्ज लेकर शादी करते है और 2-3 साल तक कर्ज चुकाया करते है ।अत: समृद्ध परिवार, समृद्ध समाज व सशक्त राष्ट्र के निर्माता आप है । – राजेश जैन, सुखलिया

बुन्देलखंड में बना देश का पहला रजत मंदिर

अजय जैन, मढ़िया । बुंदेलखंड में बनेगा देश का पहला रजत मंदिर बुंदेलखंड के प्रसिद्ध तीर्थ बंधाजी में शुक्ल चतुर्दशी के दिन बुंदेलखंड में एक नया इतिहास लिखा गया । बंधाजी में विश्व के प्रथम रजत मंदिर का शिलान्यास समारोह हजारों लोगों के बीच निर्वापक मुनिश्री समयसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में और दुर्लभमति माताजी के सान्निध्य में संपन्न हुआ । प्रात: अजीतनाथ भगवान का अभिषेक पश्चात नित्य पूजा संपन्न हुई। दोपहर 2 बजे शिलान्यास की क्रियाएं पूर्ण होने के समय समयसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि शिष्य ने गुरु से प्रार्थना की कि मैं अपार संसार में डूब रहा हूँ व्यक्ति पंचइंद्रीय विषयों में शरण ढूंढ रहा है महाराजजी ने कहा कि आपने दीपक जलाया है दीपक जल रहा है क्या? दीपक तो जल रहा है लेकिन महाराजजी ने कहा मैं कहूंगा कि दीपक बुझ रहा है आप जी नहीं रहे हैं आप मरण को धीरे धीरे प्राप्त हो रहे हैं, सरोवर में तरंगे उत्पन्न होती हैं प्रतिकूल मिटती जाती भी है आपका जन्म हुआ है मरण भी निश्चित है । सूर्योदय हुआ है तो सूर्यास्त भी होगा । संसार में कोई वस्तु अमिट है तो वह भगवान के श्री चरण कमल है । समयसागरजी महाराज ने कहा कि मेरा यहां प्रथम बार आना हुआ है । कुंडलपुर में चातुर्मास संपन्न होने पर गुरुजी के आशीर्वाद से बंधाजी के लिए विहार हुआ है । गुरुजी ने जो आशीर्वाद दिया था आज वह मंगलाचरण के रुप में पूर्ण हो रहा है । आप लोगों का जीवन,मन आपका उद्देश्य बंधाजी से बंध जाना चाहिए तभी मंदिर निर्माण सही समय पर हो पायेगा। इस अवसर पर आसपास के क्षेत्रों के हजारों लोगों ने कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर योगदान दिया ।

गोलालारीय दर्शन के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा फार्म - 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशक स्थल	127, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
5.	संपादक का नाम	राजेन्द्र जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	डीकेएन 230, विजय नगर, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर

मैं बाहुबली जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
बाहुबली जैन
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

1 मार्च 2020

दाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ...

चि. अम्बर

सुपुत्र : श्रीमती माधुरी–अनिल जैन

का शुभ विवाह

सौ.कां. पारुल

सुपुत्री : श्रीमती प्रतिभा – शाहजी श्री पुष्पेन्द्र जैन

1 फरवरी 2020 को

दस्तूर गार्डन, इन्दौर में साआनंद संपन्न हुआ ।

युवक युवती परिचय विशेषांक अक्टूबर में प्रकाशित होगा

गोलालारीय दर्शन के माध्यम से हम प्रतिवर्ष विवाह योग्य युवक युवतियों के लिए परिचय पुस्तिका का आयोजन करते आ रहे हैं इस पत्रिका के माध्यम से हमारा यह प्रयास रहता है कि समाजजनों को अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशियों का चयन आसानी हो सके इसी भावना को ध्यान में रखते हुए हमने प्रथम बार 2015 में 'प्रयास' पुस्तिका का प्रकाशन किया था उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2016 में **गोलालारीय दर्शन** के माध्यम से माह दिसम्बर में विवाह योग्य युवक युवती परिचय विशेषांक का प्रकाशन किया गया था । वर्ष 2017 में पुन: 'प्रयास' पुस्तिका के माध्यम से हमने एक और अंक का प्रकाशन कर रिश्तों को जोड़ने का सफल प्रयास किया ।

वर्ष 2018 व 19 में हमने गोलालारीय दर्शन पत्रिका के माध्यम से इसी प्रयास को आगे बढ़ाया । हमारा ऐसा मानना है कि पेपर के माध्यम से प्रकाशित किये जाने वाले बायोडाटा संपूर्ण गोलालारीय समाज में प्रत्येक घर में पहुंचते है क्योंकि 'प्रयास' पुस्तिका में दिये गये बायोडाटा सिर्फ उन्हीं परिवारों तक पहुंच पाते हैं जिनके विवाह योग्य बच्चों के बायोडाटा उसमें प्रकाशित होते है परंतु गोलालारीय दर्शन पत्रिका में बायोडाटा के प्रकाशन से 4200 गोलालारीय परिवारों में यह पेपर पहुंचने से विवाह योग्य प्रत्याशियों के बायोडाटा की जानकारी संपूर्ण गोलालारीय समाज व प्रविष्टि देने वाले हर उस समग्र जैन परिवार तक पहुंचती है जिससे अच्छे संबंधों की चर्चा घर घर में हो पाती है हमारी कोशिश रहती है कि विवाह योग्य बच्चों के लिए सुलभ रुप से संबंधों की जानकारी मिलती रहे । इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमे इस जटिल कार्य को गोलालारीय दर्शन पेपर के माध्यम से सरल बनाना है।

इस प्रयास में हमें प्रत्येक नगर के प्रत्येक क्षेत्र में से ऐसे समाजजनों का सहयोग चाहिए जो अपने क्षेत्र में विवाह योग्य बच्चों के बायोडाटा को एकत्रित कर हमें प्रकाशन हेतु भेज सकें इस प्रयास में वह समाज के साथ साथ उन परिवारों का भी भला करेंगे जो अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशी की तलाश में लगे हैं ।

वर्ष 2015 से 2019 तक हमारे इस प्रयास में जुड़े है उन सभी महानुभावों का हम ह्रदय से आभार व्यक्त करते हुए अभिनंदन करते है जिनके प्रयासों से हम विवाह योग्य प्रत्याशियों के विशेषांकों को समग्र जैन समाज में स्थापित कर पाये है ।

हमारा उन सभी महानुभाव से पुन: विनम्र अनुरोध करते है कि वह अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी में से कुछ समय इस कार्य के लिए निकाल कर मई 2020 से प्रविष्टि फार्म व प्रचार सामग्री प्रकाशित कर आप तक पहुंचाने की पूरी कोशिश रहेगी । जिसे आप आपके नगर व क्षेत्र के सभी मंदिरों तक गोलालारीय दर्शन विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक के पोस्टर व प्रविष्टि फार्म पहुंचा सके ।

आपके अथक प्रयासों से प्राप्त बायोडाटा को पर्यूषण पर्व की पावन समाप्ति पर गोलालारीय दर्शन पेपर में संकलित कर विशेषांक प्रकाशित कर सकेंगे । आपको उन परिवारों तक प्रविष्टि फार्म पहुंचाकर भरने हेतु प्रेरित करना है । आपका योगदान समाज के लिए तो लाभकारी होगा ही परंतु उस परिवार के लिए भी लाभकारी होगा जो अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशी का चयन चाहते हैं, हमारे इस अभियान में जो भी सदस्य जुड़ना चाहते है वे अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे – राजेन्द्र जैन, 9424013136

परिणयोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

चि. अंकित

(सुपौत्र : श्रीमति हरवाबाई–स्व. श्री बाबूलालजी जैन)

(सुपुत्र : श्रीमति मालती–मुकेश जैन)

का विवाह

सौ.कां. अंशुल

(सुपौत्री : श्रीमति सुशीला–स्व. श्री दयाचन्द्रजी जैन)

(सुपुत्री : श्रीमति ज्योति–श्री अशोक कुमारजी जैन)

के साथ दिनांक 10 फरवरी 2020, सोमवार को इन्दौर में साआनंद संपन्न हुआ ।

प्रतिष्ठान – मिक्की टेस्टी सेन्टर * जिनवाणी जनरल स्टोर

श्री संजीव जैन 'मंडावरा', उदय नगर

श्री सचिन–गुंजन जैन, सुखलिया

श्री जयकुमार–ललिता मोदी, एरोड्रम रोड़

श्री हुकुमचंद जैन 'पवैया', ललितपुर

श्री सुनील–ऋतु जैन

श्री प्रमोद–रंजना जैन, सुखलिया

श्री वीरचंद–आशा जैन, भोपाल

श्री प्रीतम–आशा जैन, रामचन्द्र नगर

श्री निशांत–रेशू जैन, शिखरजी ड्रीम्स

श्री अनिमेष–सुरभि जैन, पराग नगर

श्री राजेन्द्र–कल्पना जैन 'बागो', स्कीम नं. 74

श्री रमेश–प्रमिला जैन, अहमदाबाद

श्री विजय–आराधना जैन, विजय नगर

श्री अजित–कल्पना जैन, स्कीम नं.74

श्री रविन्द्र जैन, बंगाली चौराहा

श्री सुरेशचंद जैन, आजाद नगर

श्री आलोक जैन, छत्रपति नगर

श्री जितेन्द्र जैन,उदय नगर

भोजन व्यवस्था

श्रीमती उषा जैन
वैशाली नगर

श्रीमती अनुपमा जैन
स्कीम नं. 74

श्रीमती अल्पना जैन
स्कीम नं. 94

श्रीमती नेहा जैन
महावीर नगर

श्रीमती अनू जैन
अनूप नगर

श्री संजीव जैन, उदय नगर
भोजन व्यवस्था

श्री नागेन्द्र जैन, उदय नगर
सोला भोजन व्यवस्था

1. 001
2. **समकित धन्यकुमार जैन**
3. पंचरत्न/चिद्दार
4. 04.03.1992
5. 8.20
6. ललितपुर
7. B.Tech (Chem.)
8. 6'
9. गोरा
10. सर्विस–जेके टायर्स, मैसूर
11. 12.00 लाख
12. हाँ
13. –
14. एच–37, सनराइज मेगा सिटी राजघाट रोड़, तिली, सागर (म.प्र.)
15. 9111022848, 9826652076

1. 002
2. **आदर्श सनतकुमार पवैया**
3. भंडारी/बिलौआ
4. 21.07.1993
5. 6.55
6. टीकमगढ़
7. B.E. (E.C)
8. 5'8''
9. गोरा
10. सर्विस–इन्दौर
11. –
12. हाँ
13. –
14. तालाबपुरा ललितपुर (उ.प्र.)
15. 9425474432, 9208152855

1. 003
2. **रिंकी प्रवीण कुमार जैन**
3. फणीश/म्याने
4. 12.10.1994
5. 9.15
6. मड़िया
7. B.A., D.ed.
8. 5'/50 कि.
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. नहीं
14. ग्राम व पोस्ट मड़िया जिला निबाड़ी
15. 9754305098, 9993382719

1. 004
2. **प्रशांत प्रमोदकुमार जैन**
3. फणीश/बिलौआ
4. 31.03.1991
5. 02.20
6. देवेन्द्रनगर
7. B.B.A., M.B.A.
8. 5'8''
9. गोरा
10. शेयर मार्केट, इन्दौर
11. 4.80 लाख
12. हाँ
13. –
14. सलेहा रोड़, देवेन्द्रनगर जिला पन्ना (म.प्र.)
15. 7898139696, 9907370882

1. 005
2. **कोणार्क दिनेशकुमार जैन**
3. वैद्य/पवैया
4. 13.03.1992
5. 20.00
6. नागपुर (महा.)
7. M.B.A.
8. 5'5''
9. गोरा
10. व्यवसाय
11. –
12. –
13. –
14. परवारपुरा जैन मंदिर के पास, इतवारी, नागपुर (महाराष्ट्र)
15. 9326614740, 9146065606

1. 006
2. **शुभम महेन्द्रकुमार जैन**
3. दिवाकीर्ति/फणीश
4. 08.07.1993
5. 6.20
6. भोपाल
7. B.Com, L.L.B, C.S.
8. 5'/–
9. गेहुँआ
10. –
11. –
12. –
13. –
14. सी–सेक्टर, शाहपुरा भोपाल (म.प्र.)
15. 9893327403, 6261214299

हार्दिक बधाईयाँ...

आशू जैन ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर से ''पीने के पानी की शुद्धता एवं अशुद्धता की गुणवत्ता तथा मानव शरीर पर उसका प्रभाव'' विषय पर शोध कर डाक्टरेट की उपाधि ग्रहण कर अपने परिवार व समाज को गौरवांवित किया है । आप ललितपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री प्रकाशचंद जैन की सुपत्री है ।

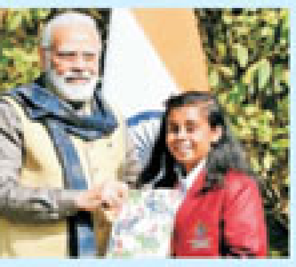

नवोदित चित्रकार **रिया जैन** को भोपाल में 22 जनवरी को राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने बाल शक्ति अवार्ड से सम्मानित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात पर श्री मोदी ने अपने ट्वीटर पर लिखा कि रिया जैन से मिलने पर बहुत खुशी हुई है मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ. चन्द्रकुमार–शशि जैन, सागर को आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की परम शिष्या आर्यिका 105 सुनयनामति माताजी की पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

राष्ट्रीय जनगणना रजिस्टर में जैन अवश्य लिखवायें ।

अप्रैल 2020 से होने वाले राष्ट्रीय जनगणना रजिस्टर में अपने नाम के बाद सिर्फ जैन सरनेम ही लिखें । आप जैन है इसका उल्लेख आपको अपने जनगणना रजिस्टर में अनिवार्य रुप से करना चाहिए । चाहे आप अपने नाम के बाद पंचरत्न,मोदी, वैद्य, फणीश,मनोरिया या कोई भी सरनेम लगाते हो । आपसे सविनय निवेदन है कि आप अपने नाम के बाद सिर्फ जैन शब्द का ही उपयोग करें । हमारा राष्ट्रीय जनगणना रजिस्टर में जैन की गणना पश्चात हमें ज्ञात हो सकेगा कि संपूर्ण भारत में कितने जैन सदस्य है ।अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने नाम में सिर्फ जैन का ही उल्लेख करेंगे ।

आचार्यश्री की मौजूदगी में हजारों भक्तों ने मुनिश्री को दी नम आंखों से अंतिम विदाई

सुसनेर। 72 साल के जैन मुनि मार्दव सागर महाराज जिन्होंने आचार्य दर्शन सागर महाराज से 29 साल पहले टोंक राजस्थान में क्षुल्लक दीक्षा ली थी । ऐसे संत को बुधवार को अपनी जिंदगी के अंतिम समय का अहसास हो गया, इसीलिए उन्होंने आचार्य दर्शनसागर महाराज जी से मुनि दीक्षा धारण की तथा नवकार के उच्चारण के साथ अपना देह त्याग दिया । देह त्यागने से पूर्व अपने जीवन की सभी वस्तुओं को छोड़कर व्रत (संलेखना) ले ली। समाधि के बाद उनकी अंतिम यात्रा पूरे शहर में निकली और अंतिम संस्कार के समय जैन साध्वी और मुनियों सहित धर्मजनों ने उनकी चिता की परिक्रमा लगाकर अंतिम विदाई दी । महाराज की विदाई आस पास के क्षेत्र में हजारों की संख्या में समाजजन अंतिम यात्रा डोल में शामिल हुए ।

वो 20 मिनिट – समाधि के पूर्व सुबह 11.40 मिनिट पर त्रिमूर्ति मंदिर में मौजूद मुकेश जैन एवं मुकेश सांवला महाराज के हाल जानने के पहुंचे । उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं दिखा तो उन्होंने आचार्यश्री को बुलाया । अपनी मौत का अहसास होने पर मुनिश्री मार्दवसागर ने खुद कपड़े उतार मुनि दीक्षा की इच्छा जताई । बाद में आचार्यश्री ने मुनि दीक्षा देकर 28 मूलगुण, आहार, पानी का त्याग करवाकर, समाधिमरण सुनवाया । समाधिमरण सुनते सुनते ही 12.01 बजे उन्होंने देह त्याग दिया ।

अंतिम सत्य है मृत्यु – आचार्य दर्शन सागर महाराज ने कहा जीवन का अंतिम सत्य है मृत्यु । जिस गांव में जिस परिवार के व्यक्ति की समाधि होती है उस गांव एवं परिवार के लोगों के लिए यह शुभ है । पंचकल्याणक से पूर्व समाधि होना कहीं ना कहीं शुभ संकेत है ।

मुनि बनने से पहले थे – मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ के बछोड़ निवासी मुनि मार्दवसागर अपने गृहस्थ जीवन में महेश कुमार जैन के नाम से जाने जाते थे । आप गोलालारीय समाज से थे । वर्ष 1948 में जन्मे महेश कुमार बचपन से ही धार्मिक थे । महाराज के भाई अशोक कुमार भोपाल ने बताया जब 30 साल की उम्र में थे तब से घर छोड़

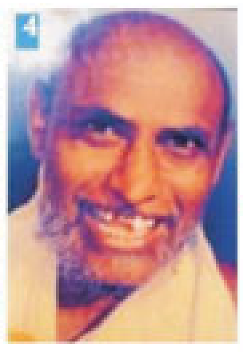

बाल ब्रह्मचारी की दीक्षा धारण कर ली थी । ग्रहस्थ जीवन के दो छोटे भाई नरेन्द्र कुमार एवं अशोक कुमार हैं । इससे बड़ी बहन राजवती जैन है । आप श्री नागेन्द्र जैन (पारस चैनल) के ताऊजी थे।

बच्चों से प्रेम के साथ लिखवाते थे धर्मग्रंथ – मुनिश्री मार्दवसागर महाराज का बच्चों से जैन धर्म की पुस्तकें लिखवाते थे तथा उन्हें धर्मज्ञान देते थे । शांत स्वभाव के इस संत को अंतिम समय में पैर व पथरी की समस्या रही । इसके बाद भी संयम का मार्ग नहीं छोड़ा ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

* श्री महेन्द्रकुमार जैन बुढ़वार वालों की धर्मपत्नी एवं नवीन, मनीष, प्रवीण जैन की माताजी का देवलोकगमन दि. 13 दिसम्बर को ललितपुर में हो गया ।

* श्री कमल, नरेश, सुरेश, दिनेश की माताजी **श्रीमती मैंदाबाई** त्रिलोकचंद जैन का देवलोकगमन दि. 14 दिसम्बर को नागपुर में हो गया ।

* कमलेश,करकेश, दीपक व प्रदीप की माताजी श्रीमती **गजराबाई** स्व. श्री खेमचंद जैन का देवलोकगमन दि. 16 दिसम्बर को विदिशा में हो गया। आप सरल स्वभाव की धार्मिक महिला थी । आपकी स्मृति में परिजनों ने 1100 रु. गोलालारीय दर्शन परिवार को दान स्वरुप भेंट किये ।

* श्री आनंद व मुकेश जैन की माताजी **श्रीमती शांतीबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री राजमल जैन का देवलोकगमन 31 दिसम्बर को विदिशा में हो गया ।

* श्री निर्मलकुमारजी की माताजी **श्रीमती गुलाबबाई जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री रुपचंद जैन का देवलोकगमन दि. 16 जनवरी को इन्दौर में हो गया ।

* श्री सुरेशचंदजी जैन 'मऊवाले' के बड़े सुपुत्र **श्री विशाल जैन** का आकस्मिक निधन दि. 21 जनवरी को इन्दौर में हो गया ।

* स्व. श्री राजेन्द्रकमारजी की धर्मपत्नी एवं मनोज जैन की माताजी **श्रीमती पुष्पादेवी जैन** का देवलोक गमन दि. 23 जनवरी को विदिशा में हो गया । आप धार्मिक एवं मिलनसार प्रवृत्ति की कुशल गृहिणी थी ।

* श्री राकेश एवं अभिषेक जैन के पिताजी **श्री हीरालालजी** का देवलोकगमन 12 फरवरी को विदिशा में हो गया

* स्व. श्री शोभागमलजी सिंघई के पुत्र **श्री लक्ष्मीचंदजी जैन** का देवलोकगमन 13 फरवरी को इन्दौर में हो गया ।

* राजेन्द्र कुमार, सनतकुमार एवं संजय सराफ के पिताजी **श्री संतोषचंद्रजी जैन सराफ** का देवलोकगमन दि. 13 फरवरी को ललितपुर में हो गया ।

* श्री अनिल, अजय एवं अनूप जैन के पिताजी **श्री बच्चूलालजी जैन** (जनता टिम्बर) का देवलोकगमन दि. 18 फरवरी को कानपुर में हो गया ।

* **श्री बादामीलाल जैन** का देवलोकगमन भोपाल में हो गया ।

नोट – विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा ।

द्वितीय पुण्य स्मृति : श्रीमती कुसुम मानोरिया

श्रद्धा सुमन

कुन्दनलाल जैन मानोरिया

पुत्रवधु एवं पुत्र – श्रीमती लता राजेश मानोरिया

श्रीमती मनीषा संजय मानोरिया

प्रपौत्र – श्रीमती सुरभि सिद्धार्थ मानोरिया

सिद्धांत, सानिध्य, संस्कृति मानोरिया

देह त्याग –
दि. 22 जनवरी 2018

स्मृति में – कुसुम कुन्दन जैन, मानोरिया धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना 25 लाख रुपये से की गयी । जिसके ब्याज से धार्मिक कार्य, सामाजिक कार्य, जरुरतमंद को शिक्षा, स्वास्थ्य आजीविका में सहयोग एवं पाठशालाओं को प्रोत्साहन के लिये सहयोग किया जायेगा ।

मैंदाबाई

गजराबाई

शांतिबाई

गुलाबबाई

विशाल

पुष्पादेवी

हीरालाल

लक्ष्मीचंद

संतोष

बच्चूलाल

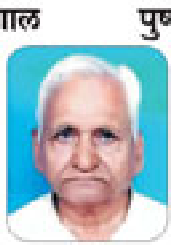
बदामीलाल

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

आचार्य विद्यासागर का आगमन हुआ इन्दौर की निर्माणाधीन प्रतिभास्थली पर

रेवती रेंज में बनने वाली प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ में 1600 छात्राओं को पढ़ाने के लिए व्यवस्था होगी। इसके अलावा वहां दो भव्य मंदिर भी बनाए जायेंगे, जिसमें कुल 1334 प्रतिमाएं विराजमान की जाएंगी । लगभग 27 एकड़ के परिसर में संत निवास, प्रतिभास्थली, होस्टल, सहस्त्रकूट जिनालय, सर्वतोभद्र मंदिर, भोजनशाला सहित अन्य निर्माण किए जा रहे हैं । आचार्य विद्यासागर पंचकल्याणक महोत्सव के बाद नगर भ्रमण कर 3 मार्च को रेवती रेंज पर पधारे है ।

दयोदय चैरिटेबल फाउंडेशन के सहयोग से 20 साल पहले देखा गया सपना अब साकार हो रहा है । 20 साल पहले ही आचार्यश्री इन्दौर एक विधान में पहुंचे थे । उस समय उसकी बची हुई राशि से जमीन खरीदी गई । इसके बाद उसे बनाने का लगातार प्रयास हो रहा था । ब्रह्मचारी सुनील भैया ने बताया कि 27 एकड़ में से लगभग 10 एकड़ जमीन पर यह निर्माण हो रहे है, जिसमें प्रतिभास्थली में 1600 छात्राओं को 100 ब्रह्मचारिणी दीदी पढ़ाएंगी। वहीं निर्धन परिवार की बालिकाओं के लिए शिक्षा भी निशुल्क रखी जाएगी ।

प्रतिभास्थली – रेवती रेंज में प्रतिभास्थली का निर्माण किया जा रहा है । कक्षा 4थी से 12वीं तक हिन्दी माध्यम में पढ़ाई व्यवस्था रहेगी । होस्टल और भोजनशाला भी होगी । अभी उदय नगर में प्रतिभास्थली चलाई जा रही है ।

सहस्त्रकूट जिनालय – यहां सहस्त्रकूट जिनालय बनाया जायेगा । यह जिनालय 126 फीट ऊंचा होगा, जिसका निर्माण जैसलमेर पत्थर से होगा । इसमें 1008 प्रतिमाएं विराजित की जाएंगी । सभी प्रतिमाएं सिद्ध भगवान और धातु की होगी।

सर्वतोभद्र मंदिर – प्रतिभास्थली में ही सर्वतोभद्र मंदिर भी बनाया जाएगा । 225 फीट ऊंचा यह मंदिर तीन मंजिल होगा । इसमें अरिहंत भगवान और सिद्ध भगवान की 324 प्रतिमाएँ विराजित की जाएंगी । सभी प्रतिमाएं धातु की होगी।

संत भवन – प्रतिभास्थली में ही संत निवास भी बनाया जा रहा है । जल्द ही यह बनकर तैयार हो रहा है । यहां पर जैन समाज के आचार्य, संत और श्रीसंघ विश्राम करेंगे । संकलन – राजेन्द्र जैन

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
जबलपुर

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
चन्द्रगिरी, राजकट्टा, डोंगरगढ़ (छ.ग.)

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
रामटेक, जिला नागपुर (महा.)

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
उदय नगर, इन्दौर (म.प्र.)

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
पपौरा जी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

गुरुकुल शिक्षण परम्परा की पोषाक हैं प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यालय

संतशिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से यह जिनालय बना शिक्षा का ज्योति द्वीप

संत शिरोमणि आचार्य प्रवर 108श्री विद्यासागरजी महाराज के परम आशीर्वाद से संचालित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ कन्या आवासीय जिनालय कन्याओं के व्यक्तित्व विकास का ऐसा केन्द्र बन रहा है जहां जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण होता है । भारत प्राचीन काल से ही अपनी सुव्यवस्थित गुरुकुल शिक्षण पंरपरा के कारण ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, नैतिक मूल्य, कला, संस्कृति, व्यापार आदि अनेक क्षेत्रों में विश्व में अग्रणी रहा है, उसी परम्परा की राह पर संचालित प्रतिभास्थली विद्यालय गुरुकुल शिक्षण परम्परा का पोषाक है । अध्यापन और प्रयोग के द्वारा विद्यार्थियों को निश्चित आदर्श तक पहुँचाने के उद्देश्य के साथ कन्याओं के शारीरिक, दार्शनिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास हेतु स्वस्थ शिक्षा योजना का सृजन किया जा रहा है । यहां स्वस्थ्य तन, मन, वचन, धन, वन, वतन और चेतन के 7 आधार स्तंभों को सुदृढ़ करने के लिए विद्यालय में शिक्षण, प्रशिक्षण, शालेय गतिविधियां तथा सुविधायें प्रदान की जा रही है । नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण, नियमित दिनचर्या, आत्मानुशासन की शिक्षा, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के अवसर, सृजनात्मकता व रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने के साथ ही योग शिक्षण, खेल-कूद, नृत्य-संगीत, पाककला, सिलाई-कढ़ाई,सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित यह विद्यालय संत शिरोमणि आचार्य प्रवर 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद शिक्षा की ऐसा ज्योति द्वीप है, जहां आधुनिकता के इस दौर में कन्याओं की सात्विक प्रगति का निरंतर मार्ग प्रशस्त हो रहा है । वर्तमान में पाँच स्थानों पर क्रमश: जबलपुर (तिलवारा), डोंगरगढ़ (चन्द्रगिरी तीर्थ), रामटेक (महाराष्ट्र), इन्दौर (मध्यप्रदेश), पपौरा (मध्यप्रदेश) पर प्रतिभास्थली विद्यालय संचालित है । यहां कक्षा चौथी से बारहवीं तक की छात्राओं का सीबीएसई बेस्ड पेटर्न पर अध्ययन कराया जाता है । कक्षा 4 से कक्षा 6तक की छात्राओं के लिए 1 जनवरी 2020 से प्रवेश प्रारंभ हो चुका है ।

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ –

1) दयोदय तीर्थ, तिलवारा घाट, जबलपुर (म.प्र.) 482002 * सीबीएसई मान्यता क्रमांक 1030322 * मोब.: 9685322388

2) चन्द्रगिरी, राजकट्टा, डोंगरगढ़, जिला राजनांदगांव (छग.) 491145 * सीबीएसई मान्यता क्रमांक 3330237 * मोब.: 9009717108, 07823-233101

3) श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, रामटेक, जिला - नागपुर (महाराष्ट्र) 440001 * सीबीएसई मान्यता क्रमांक 1130691 * मोब.: 9405707781

4) उदयनगर, बंगाली चौराहा, इन्दौर (म.प्र.) 452016 * सीबीएसई मान्यता क्रमांक 1130691 * मोब.: 9754626800

5) अतिशय क्षेत्र, पपौरा जी, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001 * सीबीएसई मान्यता क्रमांक 1030322 * मो.: 6263121898

गुरुदेव की प्रेरणा स्वालंबन की राह पर जेल बंदी

आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज के आशीर्वाद से रायपुर के निकट नारी गांव में 1000 युवक युवतियों को रोजगार देने तथा बुरे रास्ते पर चलते हुए भटके हुए भूले हुये भाई बहनों को मुख्यधारा में जोड़कर हथकरघा के माध्यम से रोजगार स्थापित करने हेतु हथकरघा हस्तशिल्प और अंबर चरखा भवन का शिलान्यास 13 फरवरी को किया गया । देश के जाने माने दानवीर उद्योगपति दयालु कृपालु धर्मात्माओं के द्वारा शिलान्यास किया गया । शिलान्यास के इस पावन अवसर पर सक्रिय सम्यक दर्शन सहकार संघ के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र. सुनील भैया एवं ब्र. दीपक भैया, ब्र. पदम भैया, ब्र. सुलभ भैया,ब्र. रौनक भैया तथा ब्र. अमित भैया, ब्र. अंकित भैया, ब्र. सजा लो भैया और चंद्र की सभी ब्रह्मचारिणी दीदीओं के तत्वावधान में एवं ब्र.उत्कर्ष भैया महेश्वर के नेतृत्व में ब्र. आकाश भैया 'बनारस' की सहयोग से सभी कार्य सानंद संपन्न हुए ।

आपको ज्ञात ही होगा कि आचार्य श्री के आशीर्वाद से सागर जेल, जबलपुर जेल, मिर्जापुर जेल, बनारस जेल, आगरा जेल, तिहाड़ जेल दिल्ली, जगदलपुर जेल इन सभी जेलों में सजा काट रहे बंदियों के उत्थान हेतु **भारत पताका हथकरघा** केन्द्रों की स्थापना की गई । आज की तारीख में सभी जेलों में लगभग 400 से 500 बंदी सजा काटते हुए भी हथकरघा की कला सीख गये और 1 दिन में 300 रु. से लेकर 800 तक कमाने लगे कुछ जेलों में कुछ कैदियों के अथक मेहनत और प्रयास करके हजारों रुपये तक 1 दिन में कमाना प्रारंभ कर दिया।

दिल्ली में एक नंबर जेल में वर्तमान 40 बंदियों द्वारा हथकरघा की कला सीख रहे हैं धोती दुपट्टा और साड़ियां शुद्ध अहिंसक तरीके से निर्मित की जा रही है । आचार्य श्री का अशीर्वाद रहा है चाहे वह जेल में हो या शहर में हो या नगर में हो या गांव में हो । जहां भी हथकरघा सेंटर प्रारंभ होगा उन सभी को सबसे पहले शाकाहार का नियम दिया जाता है जो जीवन पर्यंत के लिए मद्य, मांस, मधु त्याग करते हैं ।

उन सभी महानुभावों को हथकरघा की कला सिखाई जाती है । दिल्ली तिहाड़ जेल नं. 1 में 2200 कैदियों ने एक साथ संकल्प लिया । हम जीवन भर पर्यंत मद्य, मांस तथा मधु का त्याग करेंगे और शाकाहार अपनायेंगे उसमें अभी वर्तमान में 22 मुस्लिम लोग भी सजा काटते हुए काम कर रहे हैं उन्होंने एक पत्र आचार्यश्री के लिए भेजा है जिसका शीर्षक दिया है तिहाड़ जेल से बंदियों के द्वारा भेजा जाने वाला पत्र 'बाबा के नाम' ।

उसमें उन्होंने लिखा कि जब से तिहाड़ जेल में हथकरघा प्रारंभ हुआ है उसी दिन से हम लोग हथकरघा सेंटर में प्रवेश करते हैं उसके पहले आपकी बहुत बड़ी चित्र के सामने खड़े होकर हम अपने परमात्मा को याद करते हैं । परमात्मा के रुप में आपके चित्र को देखकर ही आनंदित होते है । आपने जब से हम लोगों के कल्याण की भावनायें रखी तभी से ऐसा लगने लगा अल्लाह एक बार फिर धरती पर उतर के आ गया विद्यासागर के रुप में जो हम सभी के कल्याण की भावनाएं उत्थान की भावनाएं आने लगी ।

हम सभी आपके दर्शनों की अभिलाषा रखते हैं जब से हथकरघा का कार्य प्रारंभ किया है तब से हम लोगों का मानसिक परिवर्तन हुआ है जो बदले की भावनाएं निरंतर चलती थी वह भावनाएं बदल चुकी है और अपनेपन की भावनाएं हम लोगों के हृदय में उद्‌घाटित होने लगी हम सब के ऊपर आपका आशीष हमेशा बना रहे यही आपसे गुजारिश है । ऐसा पत्र लिखकर उन्होंने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चरणों में भेजा । हर जेल के अंदर कुछ ना कुछ एक नया कार्य हो रहा है उन कैदियों के मानसिक परिवर्तन के साथ जो भी पैसा वहां कमाते है परिवार के साथ संयुक्त खाता खुल चुका है जिता भी पैसा यहां कमाते है वह सारी राशि उनके परिवार वाले निकालकर सदुपयोग करते हैं । सजा काटते हुए भी परिवार का पालन उन बंदियों के द्वारा किया जा रहा है यही अनुकंपा आचार्य विद्यासागरजी महामुनिराज की हम सबके ऊपर रही और आज पूरे देश के अंदर करीब करीब 150 से 200 हथकरघा के सेंटर प्रारंभ हो चुके है जिसमें करीब 1000 परिवार लाभांवित हो रहे है । बनारस जेल से बनी बनारसी साड़ी बनकर आती है जो बाजार में 10 से 15 हजार में बिकती है किंतु हम लोग व्यापार नहीं करना चाहते । हम लोग तो सिर्फ सिर्फ आचार्य भगवन की भावनाओं को ध्यान में रखते है और उन सब कैदियों की मानसिक परिवर्तन के लिए जो लागत कीमत होती है उसकी कीमत पर साड़ियां देते है । अभी इन्दौर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ उसमें हम लोगों ने दो हजार से अधिक धोती, दुपट्टा हथकरघा केन्द्र से लेकर सभी इन्द्र-इन्द्राणियों को दिये । आपसे भी आशा करते है कि आप अपने मंदिरों में भगवान का अभिषेक करने के वस्त्र, पानी छानने के वस्त्र और अभिषेक करने के धोती दुपट्टे और मंदिर जाने की महिलाओं की साड़ियां हमारे हथकरघा सेंटर से खरीदें । आप चाहे तो हमसें संपर्क कर आर्डर दे सकते है । आपके नगर/गांव में यह भिजवा दिया जायेगा । बहुत कम राशि में अहिंसा का प्रचार प्रसार और देश को सुदृढ़ बनाने के लिए भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा के सूत्र को उद्‌घाटित करने के लिए शुद्ध अहिंसक वस्त्र पहने और धर्म के प्रचार प्रसार में अपना सहयोग प्रदान करें । यही आपसे निवेदन है ।

संपर्क सूत्र - ब्र. सुनील भैया 9425963722, ब्र. दीपक भैया 9425344733, ब्र. सुलभ भैया 7977949783, ब्र. रौनक भैया 7693846284

संकलन - सपना जैन, भोपाल

गुरुवर ने दिया आशीष, हम धन्य हो गये...

राजेन्द्र जैन बागो, इन्दौर । आचार्य श्री के सान्निध्य में संपन्न पंचकल्याणक में गोलालारीय समाज के निर्माणाधीन मंदिर की तैयारी पूर्ण न होने के कारण इस अद्वितीय आयोजन में सहभागी न होने की कसक समाजजनों के मन रही । हमारी भावना को ध्यान में रखते हुए बा.ब्र. अभय भैया के मार्गदर्शन अनुसार गोलालारीय समाज के स्थाई व अस्थाई ट्रस्टी के सदस्य दिनांक 25 फरवरी को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के सम्मुख कुम्हेड़ी स्थित लार्ड आदिनाथ रेसीडेंसी में 1008 श्री आदिनाथ भगवान के जिनालय की प्रगति की जानकारी व आशीर्वाद लेने के उद्देश्य से उदासीन आश्रम पर पहुंचे। बाल ब्रह्मचारी सुनील भैया, बाल ब्रह्मचारी अनिल भैया व बा.ब्र. अभय भैया 'आदित्य' के मार्गदर्शन में आचार्यश्री के सम्मुख समाज के प्रतिनिधि मंडल के स्थाई ट्रस्टी श्री रमेशचंदजी, समाज अध्यक्ष श्री कोमलचंदजी व सचिव श्री बाहुबली जैन ने मंदिर की रुपरेखा आचार्यश्री के सम्मुख रखी । सचिव श्री बाहुबली ने आचार्यश्री को मंदिर के साथ साथ निर्मित होने वाले संत निवास और पूजा प्रक्षाल के लिए शुद्ध जल हेतु कुएँ इत्यादि के निर्माण के बारे में मंदिरजी का नक्शा बता कर पूर्ण जानकारी से अवगत कराया व समाज की एकजुटता व सुदृढ़ता लाने के उद्देश्य से प्रकाशित की जाने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'गोलालारीय दर्शन' के बारे में भी जानकारी दी। आचार्यश्री ने मंदिर निर्माण व अन्य जानकारियों को देखकर आशीर्वाद प्रदान किया । उपस्थित समाजजनों ने आचार्यश्री से निवेदन किया कि आपके सान्निध्य में ही मंदिर जी के पंचकल्याणक संपन्न हो ऐसा आशीर्वाद हमें प्रदान करें । समाज न्यासी श्री रमेशचंदजी अध्यक्ष श्री कोमलचंदजी व सचिव श्री बाहुबली जी ने आचार्यश्री से करबद्ध आग्रह किया कि प्रतिभास्थली की ओर विहार के समय समाज के निर्माणाधीन मंदिर की प्रगति को देखने के लिए आप निर्माणाधीन मंदिर की भूमि पर चरणरज देने की कृपा करें । आचार्यश्री प्रतिभास्थली पर विराजमान हैं । हमारा पूर्ण प्रयास रहेगा कि इस अवधि में आचार्यश्री के चरण हमारे निर्माणाधीन मंदिर पर अवश्य पड़े । मंदिर निर्माण का कार्य तेजी से पूर्णता की ओर अग्रसर है, आपके यथासंभव आर्थिक सहयोग से हम इस कार्य को अतिशीघ्र पूरा कर संभवतः इस वर्ष के मध्य तक पंचकल्याणक कराने का प्रयास करेंगे ।

निर्माणाधीन श्री आदिनाथ जिनालय

लार्ड आदिनाथ कालोनी, कुम्हेड़ी, इन्दौर

मूलनायक वेदी निर्माण की न्यौछावर राशि	- 21 लाख
शिखर निर्माण की न्यौछावर राशि	- 31 लाख
मंदिरजी में श्रावकों की सुविधा हेतु लिफ्ट	- 5 लाख
वेदीजी के चारो तरफ बीम निर्माण की न्यौछावर राशि	- 31 हजार रु. प्रति बीम
मंदिरजी की खिड़कियां	- 21हजार रु. प्रति खिड़की
खिड़कियों के पल्ले	- 11 हजार रु. प्रति पल्ला
मंदिरजी के मुख्य चौखट निर्माण न्यौछावर राशि	- 71 हजार रु.
मंदिरजी के मुख्य चौखट के दरवाजे	- 51 हजार रु. प्रति दरवाजा
मंदिरजी के अन्य चौखट	- 51 हजार रु. प्रति चौखट (2 चौखट)
अन्य चौखट के दरवाजे	- 41 हजार रु. प्रति दरवाजा
मंदिरजी में फ्लोरिंग	- 2100 रु. स्केअर फीट
प्रवेश द्वार की सीढ़ियां	- 3100 रु. प्रति सीढ़ी
द्रव्य सामग्री कमरे के प्लेटफार्म निर्माण की न्यौछावर राशि	- 21 हजार रु.

संत निवास / द्रव्य सामग्री व अन्य कमरों के निर्माण के लिए आप मंदिर निर्माण कमेटी के सदस्यों से चर्चा कर सकते है । मंदिरजी निर्माण में दान देने के लिए आप नीचे दिये गये बैंक खाते में सीधे राशि जमा कर निम्न नंबरों पर सूचना देने का कष्ट करें ताकि आपको दानराशि की रसीद प्रेषित की जा सके ।

बैंक - बैंक ऑफ इंडिया खाता क्रमांक - 88031010100004475

IFS कोड - BKID0008803 शाखा - सियागंज ब्रांच, इन्दौर

अधिक जानकारी के लिए आप निम्न पदाधिकारियों से संपर्क कर सकते है - श्री कोमलचंद जैन 9329524227, बाहुबली जैन 9827247847, हरीशचंद जैन 9479720709, राजेन्द्र जैन 'बागो', 9424013136, प्रियांश जैन 9893910169, राजेश जैन 'सायकलवाले' 9425348193

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित